सत्य एँव अर्थ पूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लैमेन इवैंजलिक्ल फैलोशिप, (LEF,Chennai)

जुलाई-अगस्त, 2009

परमेश्वर सदा भला है।

हमारी कलीसिया में एक वृद्ध आदमी थे। जिन्दगी भर उन्होंने परमेश्वर से बहुत प्रेम किया। जॉन नामक वह जन यह कहते रहते थे, 'परमेश्वर भला है।' जहाँ भी हो, जिस हाल में भी हो, वह हर समय यही कहते। जब जॉन ने शादी की, तब उन्होंने कहा, 'परमेश्वर भला है।'

जब जॉन नौकरी खो बैठे, तब उन्होंने कहा, 'परमेश्वर भला है।'

जब जॉन के पिताजी का देहान्त हुआ, तब उन्होंने कहा, 'परमेश्वर भला है।'

जब जॉन का बटुआ चुराया गया, तब उन्होंने कहा, 'परमेश्वर भला है।'

ठीक! आप समझ गये होंगे! जॉन चाहे जो भी करते या उनके साथ जो भी घटता, हमेशा हम उनको यह कहते सुनते, 'परमेश्वर भला है।'

कुछ महीने पहले, जॉन को कैंसर का रोग हुआ, उसका कोई रोग-निदान न हुआ। यह रोग बहुत तेजी से शरीर में फैलता गया। डॉक्टर ने उन्हें कहा कि उनके जीने के लिए शायद कुछ ही हफ़्ते बचे है। अस्पताल में मृत्युशैय्या पर भी, सबने जॉन को अपने मशहूर वाक्य को दोहराते सुना, 'परमेश्वर भला है।'

हमारे पादरी चार्ल्स, जॉन के बहुत अच्छे मित्र थे। जॉन से मिलने हर रोज अस्पताल जाया करते थे। और हर रात, निकलने से पहले, जॉन चार्ल्स से कहते, 'परमेश्वर भला है।'

कई हफ्ते तक, अपने गहरे मित्र को, उस जानलेवा-रोग से हालत बदत्तर होती देख कर, चार्ल्स से आगे बरदाश्त नही हुआ। अंततः चार्ल्स ने जॉन से पूछा, 'जॉन, तुम मेरे गहरे मित्र हो। और मैं तुम को चाहता हूँ। यह बात भी है कि मैं प्रभु से उतना ही प्यार करता हूँ, जितना तुम करते हो। मैंने तुम्हें जिन्दगी भर यह कहते सुना, 'परमेश्वर भला है।' अच्छे समय

पृष्ठ २ पर..सदा भला है।..

आत्मिक उन्नति केलिए देखना न भूलें

'परमेश्वर की चुनौती'

ETC TV कार्यक्रम

हर शनिवार सुबह ७:०० बजे

दासत्व से उत्तराधिकार में

तुम ने दासत्व का आत्मा नहीं पाया है कि फिर भयभीत हो, परन्तु पुत्रों के समान लेपालकपन का आत्मा पाया है, जिस से हम 'हे अब्बा! हे पिता!' कह कर पुकारते हैं। (रोमियों ८:१५)

दासत्व का आत्मा या लेपालकपन का आत्मा - हम ने कैसा आत्मा पाया है? दासत्व का आत्मा, लोगों को दुबारा बंदी बनाने की कोशिश में है। पौलुस इन लोगों को अपनी दासत्व से रिहा कराने के प्रयास में है। किसी कारण, हम कुछ न कुछ दासत्व में रहना पसंद करते है। और कही पर यह गुलामी हमें जकड़ लेती है। भय की गुलामी एक आम बात है। और हमारी कल्पनाएँ हमारे उस भय को कई गुणा कर देती हैं। इसलिए हम ऐसे चीजों की कल्पना करते रहते है जिनका कोई अस्तित्व ही नहीं। यह दासत्व का आत्मा है। लेपालकपन का आत्मा हमें सिंहासन पर अपना ध्यान मग्न करने में सहायता करता है। हमें कहा गया है कि हम मसीह के साथ सह-उत्तराधिकारी हैं। पवित्रात्मा इस बात की गवाही देता है कि हम मसीह के साथ सह-उत्तराधिकारी है। लेपालकपन का आत्मा 'हे अब्बा! हे पिता!' कहके पुकारने देता है।

फिर वह उनसे थोड़ा आगे बढ़ा, और भूमि पर गिर कर प्रार्थना करने लगा कि यदि सम्भव हो, तो यह घड़ी टल जाए। और वह कहने लगा, 'हे अब्बा पिता! तेरे लिए सब कुछ संभव है। यह प्याला मुझ से हटा ले। फिर भी मेरी नहीं परन्तु तेरी इच्छा पूरी हो।' (मरकुस १४:३५,३६) यह गतसमनी के बगीचे में हुआ था। वहाँ यीशु मसीह पुकार उठे 'हे अब्बा! पिता!' यह पुकार, एक दृढ़ सम्बन्ध का एक अवर्णनीय अभिव्यंजना की तरह दिखता है। ऐसा जैसे बहुत भरोसे के साथ जो तुम सिर्फ अपने पिताजी को कहते हो। उन पर दृढ़ विश्वास पूर्वक कहते, 'हे अब्बा! पिता! अब मुझे क्या करना है?' यहाँ यीशु, मनुष्य के अपराधों के प्याले का सामना कर रहे थे। पाप रहित परमेश्वर का पुत्र, स्वयं इस पाप के प्याले का सामना कर रहे है - यह कितना अनोखा लम्हा है। इसलिए यह पुकार, यह आह यीशु के हृदय से निकली थी। जो लोग क्रूस को उठाकर नही चलते उनके हृदय में ऐसी पुकार नही होगी। हम अपने आप को दीन नहीं करना चाहते। अपने पापों को अपना कहके स्वीकारना नही चाहते। हम अपने देश के पाप अपने ऊपर लेना जरूर नही समझते। रोने लायक अपने देश की हालत देख, हम अपनी आखें बन्द कर लेते है।

हम अपने निजी काम में इतने व्यस्त रहते है। और हमारे चारों तरफ दुनिया के प्रति हमें कोई सच्चा बोझ नही। हमारे प्रभु यीशु सेवा में बहुत व्यस्त हो सकते थे। संगठन-संबंधी कार्यों में एक जोखिम समस्या है। वह तुम्हारी मेहनत पर निर्भर रहता है। इसलिए तुम्हें बहुत कष्ट उठाना पड़ता है। और उस में परमेश्वर का कोई योगदान नही होता। यह एक मानवीय पुनरुद्धारण है। इस में 'हे अब्बा, पिता' नही होता। इस में क्रूस नही होता। और न ही वो लहू के बूंद जो स्वेद बिन्दु बने। नही! वह केवल शारीरिक परिश्रम और जोश है। क्या हम वही देख रहे है? क्या वही अंश है जो यीशु हमें सिखा रहे है? आत्माओं को लेकर बोझ और दूसरों के पापों के लेकर बोझ - हम में यही होना चाहिए। अगर वह 'हे अब्बा, पिता!' की पुकार नष्ट हो जाये तो मैं निश्चित कह सकता हूँ कि वहाँ एक विशाल शून्य है। और उस शून्य को भरने कोई भी चीज आ सकती है। तुम्हारे विचार, भय, दुष्ट चीजों के प्रति झुकाव, लालसायें, झूठ और अर्ध-सत्य बोलने की वह पुरानी आदत तुम्हारे हृदय में पुनः प्रवाहित होगीं।

मगर यीशु अपने बच्चों को कैसा आत्मा देंगे? वे कहते है, 'मैं तुम्हें दासत्व से छुड़ा लाया हूँ। इसलिए तुम्हारा वह दासत्व का आत्मा, नष्ट हो गया है। अब तुम में लेपालकपन का आत्मा है। हमारा, हाल ही में शुरू हुई सहभागिता नही है। ६५ साल पहले हमारा प्रारंभ हुआ है। सामान्य परिस्थिति में अब तक हमें उस लेपालकपन के आत्मा में स्थिर हो जाना चाहिए था। क्या हमने उस लेपालकपन के आत्मा में दृढ़, स्थिर, उसी पर आधारित पुष्टिकरण पाया है? हम ईमानदार बने! यह क्या है? किस प्रकार की आत्मा ने हमें जकड़ लिया है। परमेश्वर और इस संसार का आत्मा, इन दोनों के बीच बैर है। वह तुम्हें सोचने पर मजबूर करता है - 'मैं जल्दी अमीर कैसे बन पाऊँगा?' वहाँ गतसमनी कहाँ है? क्या यह पुकार हम खो बैठे है? हम परमेश्वर के सामने ईमानदार रहें और अर्ध-सत्य न बोले।

सत्य का आत्मा, परमेश्वर का आत्मा है। और लेपालकपन का आत्मा, सत्य के आत्मा की गठरी है। अगर इस सत्य का सामना नही कर पायें तो यह एक भयानक विषय है। सत्य किसी को नही छोड़ता। मगर क्या तुम्हारे लिए सत्य भला है? सत्य जानने के लिए, तुम्हें कुछ परीक्षाओं से गुजरना होगा। और सत्य सबको कड़वा लगता है। मैं कई देशों में यही प्रचार किया कि अगर फैलोशिप में बार-बार संजीवन नही होता, तो यह फैलोशिप मुरदा बन जायेगी। कम से कम हर पाँच या दस सालों में जागृति होना ज़रूरी है। दस सालों में बच्चे नव युवक बन जाते है। और अगर वे बेदारी के बारे में नही जानेंगे, सत्य के अनुसार नही चलेंगे तो, उनके लिए कोई अवसर नही रहेगा। पन्द्रह साल का युवक, व्यवसाय के बाजार में एक नया सदस्य बनेगा। जब वह उस में प्रवेश करेगा तो उसकी जेब में पैसे आयेंगे। मगर परमेश्वर के राज्य को पहला स्थान दे, उसने यह कभी नही सीखा। 'अब्बा, पिता' कहके उसने कभी नही पुकारा। वह इस दुनिया के लिए एक धोखे की बात के समान है। संजीवन की आवश्यकता को क्या तुम देख पा रहे हो? संजीवन के लिए तुम्हारे हृदय में यह पुकार स्वाभाविक होनी चाहिए। जोर देकर या प्रयास करके तुम यह पुकार नही प्राप्त कर पाओगे।

पृष्ठ २ पर...उत्तराधिकार में...

पृष्ठ १ से...उत्तराधिकार में..

चार्ल्स फिन्नी एक व्यवसायी के बारे में बात किया करते थे। वे अपने कारोबार से लौटते और तुरन्त प्रार्थना सभा में प्रार्थना का आत्मा में मग्न होते। श्रीमान फिन्नी कहते, 'यह कितना व्यस्त आदमी है और उन पर कितनी जिम्मेवारी है। फिर भी वे अपने प्रार्थना के आत्मा को कैसे कायम रख पाते हैं?' सम्भवतः फिन्नी उनके घर में मेहमान बन कर रहे। और इस तरह एक दिन, जब फिन्नी के बच्चे को दूध या कुछ चीज की जरूरत थी तो वे सोने के कक्ष से नीचे उतरे। तब सुबह लगभग तीन बजा था। और उन्होंने देखा कि वह व्यवसायी परमेश्वर के सान्निध्य, प्रार्थना में खोया हुआ था। उन्होंने कहा, 'अब मैं जानता हूँ, किस तरह यह आदमी प्रार्थना के आत्मा में रहता है।' उस आदमी ने कहा, 'परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संपर्क रखने के लिए, मेरे पास एक ही मार्ग है। मैं मध्य रात्रि में उठकर, परमेश्वर के साथ अपना वक्त गुजारता हूँ।' ऐसा करने में, कितने अनुशासन की जरूरत है, तुम जानते हो।

तुम समझ सकते हो कि ऐसे लोगों में हे अब्बा, पिता कहने की पुकार रहती है। वे इस संसार में तो है मगर इस संसार के नही है। ऐसा लगता है कि संसार उनमें कभी प्रवेश नही कर पाता। प्रभु यीशु ने यह दो बार कहा, 'तुम संसार के नही हो, जैसे मैं संसार का नही हूँ।' उससे मुझे एक जोरदार बढ़ावा मिलता है। हम सिद्धता के बारे में बाते करते आ रहे है; हवा में बाते करने से कोई फायदा नहीः 'अतः तुम सिद्ध बनो, जैसा कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।'

वास्तव में, जब एक महत्व पूर्ण निर्णय लेने के क्षण या संकट के समय में हम नासमझ बच्चों के समान है। जैसा चाहा, वैसे हम बात करते है। अपने भय को अभिव्यक्त होने देते है। और हम सिर्फ कहते है, 'मेरे इच्छानुसार हो।' यह लेपालकपन का आत्मा नही है और ना ही सत्य का आत्मा। 'तेरी इच्छा पूरी हो, मेरी नही।' लेपालकपन का आत्मा तुमको यह पुकारने पर मजबूर करता है। यह बहुत कठिन और थकाऊ हो सकता है। यह तुम को मार भी सकता है। मगर यह लेपालकपन का आत्मा तुमको, परमेश्वर की इच्छा में एक दृढ़ संस्थापन देता है। और परमेश्वर की इच्छा के प्रति एक कभी ना झुकने वाली (सुपुर्दगी) वचन बद्धता देता है।

परमेश्वर के पास हमारे लिए एक जमा पूंजी है। वह क्या है? परमेश्वर के उत्तराधिकारी! क्या तुम उसको हासिल करने दौड़ रहे हो? क्या हम में लेपालकपन का आत्मा है? मसीह का आत्मा, परमेश्वर के पुत्र का आत्मा, हम में यह पुकारने भेजा जायेगा, हे अब्बा, पिता। क्या यह पुकार हम में से निकल रही है? जब तुम में यह पुकार हो तो, बाकी सब पुकार और दबाव बाध्यता तुमसे निकाल दिया जायेगा। क्यों की तुम एक पुत्र हो और तुम्हारा स्थान यीशु के साथ है। तुम्हारी पुकार, यीशु के हृदय से निकलने वाली पुकार होगी। अनेक साल मसीह बनकर जीने के बाद, हमारी परिपक्वता कहा है? बहुत प्रकाशन पाने के बाद, हमें परमेश्वर के साथ-साथ, स्वर्ग सीमाओं में चलना चाहिए। परमेश्वर हमारी सहायता करें!

- जोशुआ दानिय्येल

***

पृष्ठ १ से..सदा भला है।..

के दौरान, शायद यह बात मैं समझ सकता हूँ, यह कहें कि परमेश्वर कितना भला है, शायद कठिन समय में भी, ताकि तुम उनमें सामर्थ पाओ - मगर अब यहां अपनी मरणशैय्या पर पड़े, तुम इतने आशावादी कैसे बने रह सकते हो? हर दिन कैसे कह पाते हो ' परमेश्वर भला है'। जब कि तुम जानते हो, वह तुम्हें मरने दे रहा है?'

जॉन चार्ल्स की तरफ देखकर सिर्फ मुस्कुराए। 'प्रिय मित्र, क्या तुम नही देखते, हरबार जब मैं कहता हूं, परमेश्वर भला है - परमेश्वर को स्तुति देने की, वह मेरी एक छोटी सी कोशिश थी, जो मेरी पहुंच में थी। और देख, विश्वासी बने रहने का मुझे क्या प्रतिफल मिला। मैं मर रहा हूँ। तुम कहते हो, परमेश्वर मुझे मरने दे रहा है। ऐसे कह रहे हो मानो यह एक बुरी बात है। चार्ल्स, क्या तुम भूल गये हो, परमेश्वर के लिए हम जिये, और एक दिन स्वर्ग में उनसे मिलें, यही हमारा लक्ष्य है। देखो, परमेश्वर भला है। अंततः उन्होंने मुझे घर बुला लिया। और कुछ ही घंटों में मैं उनके साथ सदा रहने वाला हूँ। क्या इस से बढ़ कर मुझे कुछ और मिल सकता है, मैं कल्पना नही कर सकता।'

उसी रात जॉन अपनी नींद में ही चल बसे। जॉन की अंत्येष्टि पर, चार्ल्स ने खड़े होकर सिर्फ दो ही बातें कहीं: 'मैं अपने दोस्त जॉन की कमी महसूस करता रहूँगा। मगर मैं जानता हूं जल्दी ही एक दिन मैं उनको दुबारा देख पाऊंगा। और परमेश्वर भला है।'

***

डरते और काँपते

'भय सहित यहोवा की उपासना करो, और थरथराते हुए मग्न हो।' (भजन संहिता २:११)

क्यों थरथरायें? हम स्वर्गीय अधिपति की उपासना कर रहें है। हमारे विश्वास में किसी प्रकार का अहंकार स्थान न पाये। क्योंकि परमेश्वर प्रेम है, तो यह न सोचना कि जो मन मे आया वह अपनी इच्छानुसार कर सकते हो। भय सहित प्रभु की उपासना करें, क्योंकि उनके उद्देश्य महान है। भय और थरथराते हुए उनकी सेवा में सम्मिलित हो। वह तुमको कैसे इस्तेमाल करने जा रहे हैं? 'मुझ से मांग तो निश्चय ही मैं जाति-जाति को तेरे उत्तराधिकार में, और पृथ्वी के छोर, तेरी निज भूमि होने के लिए दे दूंगा। तू लोह-दण्ड से उनके टुकड़े कर देगा, और कुम्हार के बर्तन के समान तू उन्हें चकनाचूर कर डालेगा।' (भजन संहिता २:८-९) अगर भय और थरथराते हुए परमेश्वर की उपासना करें तो न जाने तुमको वह कितना सामर्थ देने वाला है।

इग्लैण्ड की महारानी के साथ भोजन करना हो, तो तुमको अपनी इच्छा के अनुसार व्यवहार करने की आजादी नही है। अपने घर में तुम हँसते, बाते करते, बेफिक्र रह सकते हो। मगर महारानी के सम्मुख तुम्हें सावधान रहना होगा। राजाओं के राजा-परमेश्वर के सामने तुमको और अधिक चौकस रहना होगा। तुमको अति पवित्र रहना होगा। परमेश्वर तुम्हारे विचारों को और मन के गहरे उद्देश्यों को पढ.लेता है। तुम में कैसी भावनायें है, वह जाँचता है। किस प्रकार के विचारों से तुम्हारा मन भरा है, यह भी वह परख लेता है।

'इस्राएलियों की सारी मंडली से बात कर और कहः तुम पवित्र बने रहो, क्यों कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा पवित्र हूँ।' (लैव्यव्यवस्था १९:२) तुम्हारी अपनी मर्यादा का स्तर रहता है। मगर परमेश्वर का स्तर कहीं अधिक ऊँचा हैं। जब हम उनके सम्मुख जायें, हम थरथरायें। मूसा की तरह अगर हम नम्र रहें, सावधान और दीन रहें तो जाति जाति के लोगों को हम लोह-दण्ड से टुकड़े-टुकड़े कर पायेंगे। मूसा ने मिस्र देश को कुम्हार के बर्तन की भाँति चकनाचूर कर दिया। अगर तुम अपने आप को परमेश्वर के सामने खड़ा रहने योग्य बना पाओ तो, परमेश्वर कहते है कि तुम भी वैसे ही कर पाओगे।। मूसा ने अपने आपको दीन करके, परमेश्वर के पवित्र सानिध्य में खड़ा होने योग्य बनाया। मूसा के सामने एक महान राजा को थरथराना पड़ा।

परमेश्वर कहते है कि तुम उनके युद्ध की कुलहाड़ी हो। अगर हम शुद्ध बने रहे तो वह हमें कितना सामर्थ देंगे! पवित्र उद्धारकर्ता के आधिपत्य के सामने क्या तुम थरथराते हो? तुम्हारा सारा प्रेम पाने योग्य, परमेश्वर के पुत्र को क्या तुम चूम रहें हो? उन्होंने मूसा को ऐसा सामर्थ्य दिया। वही सामर्थ्य तुमको भी वह

For More Details Please contact on any of the following Addresses.

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532-2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-66334763/ 25008840
NOIDA(Delhi): Beautiful Books, Basement, Sharma Market, Atta, Sector-27, NOIDA, Uttar Pradesh Ph.09810776324.
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

देंगे। विनम्रता,पवित्रता का एक भाग है। जब तुम में इस प्रकार की पवित्रता होगी, तब तुम एक महान शक्ति रहोगे।

'तु अपने मन में अपने जाति-भाई से बैर न रखना। अपने पड़ोसी को अवश्य डाँटना, नहीं तो तू भी उसके अधर्म का दोषी ठहरेगा।' (लैव्यव्यवस्था १९:१७) तुम अपने पड़ोसी को नाश होते नही देख सकते। तुम ऐसे कार्य करो जिससे की वह पश्चात्ताप करें। 'इसलिए कि तुम पुत्र हो, परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो 'हे अब्बा! हे पिता!' कह कर पुकारता है, हमारे हृदयों में भेजा है। (गलातियों ४:६) उन्होंने अपना आत्मा तुम में भेजा है, ताकि तुम उत्तराधिकारी होने का दावा कर सकते हो।

जब पवित्र आत्मा तुम में प्रवेश करता है, तब तुम अपने उत्तराधिकार के लिए पुकारते हो। परमेश्वर के वादों का दावा करो। उनको नष्ट होने न दो। उनके वायदे तुम्हारे लिए रखे गये हैं। अगर तुम उनका दावा नही करोगे तो तुम एक हारने वाले व्यक्ति हो। ऐसी महान प्रतिज्ञाओं को अपने हाथों से क्यों धो बैठते हो? क्या तुम अपने प्रतिज्ञा-पत्र या अधिकारपत्र भूल जाते हो? उस से भी बढ़कर मूल्यवान चीजों को तुम खो रहे हो। तुम नही जानते कि परमेश्वर इस दुनिया के किस भाग में तुम को एक युद्ध-शस्त्र की भांति इस्तेमाल करेंगे। परमेश्वर को तुम्हारी जरूरत है। उनके सम्मुख थरथराओ। उनकी प्रतिज्ञाओं का दावा करो। जिस तरह मूसा ने किया, तुम को भी उसी तरह करना होगा। हमारे देश में, हमें ऐसा करना होगा। परमेश्वर के, उनके अपने अस्त्र-शस्त्र और तरीकें है। परमेश्वर तुम पर वह सब प्रकट करेंगे। अपने उद्धारक के साथ एक मन रहों।

अगर परमेश्वर के प्रति मन से भय खोया हुआ कोई लापरवाह पुरुष या स्त्री हों, तो मुझे हमेशा यह डर रहता है कि कहीं वह आत्मिकअन्धकार न लाये। और वह किसी न किसी दिन परमेश्वर के नाम को भी बदनाम करेगा। 'हे भाइयों, तुम स्वतन्त्र होने के लिए बुलाए गये हो। इस स्वतन्त्रता को शारीरिक लालसाओं को पूर्ण करने का साधन न बनाओ, परन्तु प्रेम से एक दूसरे की सेवा करो।' (गलातियों ५:१३) परमेश्वर का आत्मा तुम को उस स्तर पर रखता है जहाँ तुम्हारे मन में कोई भी दुष्ट विचार नही आते।

परमेश्वर तुम को दूसरों से प्रम करना सिखाएगा। ऐसा प्रेम स्वभाविक रूप से तुम में रहेगा। पवित्र प्रेम! उत्तराधिकारी बनना, यह कितनी अद्‌भुत बात है। प्रेम के जरिये काम करने वाले विश्वास को ले कर तुम परमेश्वर की सेवा करोगे। अपने भविष्य के विषय के सारे विचारों को परमेश्वर पर छोड़ दो। तुम्हारे लिए क्या सब से अच्छा है, वह जानता है। थरथराते हुए प्रभु की उपासना करो। वह महान परमेश्वर है।

- एन दानिय्येल।

यीशु सब के लिए मरे !

एक विशाल नदी के आर पार फैला एक रेलवे पुल था। वह दो भागों में इस तरह बटा था कि उसे घुमाकर किनारे के समानान्तर किया जा सकता था। दिन के अधिकतर समय, वह पुल किनारे के समानान्तर घुमाकर रखा जाता था। इस से पुल के बगल से जहाज़ आसानी से निकल जाते। मगर दिन के दौरान नियमित समय पर रेल गाड़ी वहाँ से गुजरती। तब उस पुल को घुमाकर पटरी जोड़ दी जाती ताकि वह गाड़ी नदी को पार जाये।

एक दर्जी नदी की एक ओर स्थित छोटी सी कुटी में रहता था। जब गाड़ी को पार करने का समय आता तब वहाँ से वह पुल को घुमाने, संचालक-यंत्र के द्वारा नियंत्रित करता। और ठीक जगह उसे बैठाता। एक दिन शाम के समय, वह दर्जी आखिरी गाड़ी का इन्तज़ार कर रहा था। संध्या के धुंधले प्रकाश में बहुत दूर गाड़ी की लाइट को देखा। वह संचालक-यंत्र समूह के पास गया। गाड़ी के निर्धारित दूरी तक आने के बाद उसे पुल को घुमाना था। उसने पुल को निश्चित स्थित पर घुमाया। मगर एक मशीन का पुर्जा उसे ठीक स्थान पर लाने का काम नहीं कर रहा था। अगर वह पुल ठीक स्थिति में आकर बैठ न जाए तो गाड़ी के गुजरने के समय उस पुल का सिरा आगे-पीछे हिलते-डुलते रहेगा। इससे रेलगाड़ी पटरी से उतर कर नदी में गोता लगाकर डूब सकती थी। यह एक पैसिन्जर गाडी थी और उसमें बहुत यात्री होते थे।

पुल को नदी के आर-पार लगाकर नदी के उस भाग की तरफ तेजी से गया। वहाँ एक उत्तोलक (लीवर) की घर्घर आवाज़ सुन पा रहा था। पीछे झुक कर पीठ के बल उस पुल को दबाकर बैठाया। कई लोगों की जिन्दगी उस आदमी के उपर निर्भर थी। तब पुल की दूसरी ओर से उसने एक आवाज सुनी। वह आवाज सुनकर उसका खून ठंडा पड गया। 'पिताजी, आप कहाँ हो?' उसका चार साल का बेटा, उसे ढूढ़ते पुल पर चलता आ रहा था। उसके पहले मन में यह बात आयी कि चिल्लाये 'भागो, भागो!' मगर गाड़ी बहुत नज़दीक थी। बेटे के नन्हे पैर समय पर उसको पुल के पार नही पहुँच पाते। उस आदमी ने, दौड़ने और अपने बेटे को उठाकर सुरक्षित स्थान ले जाने के लिए लीवर करीब करीब छोड़ ही दिया था। मगर उसके ध्यान में आया कि वह समय पर लीवर कसने वापस नहीं पहुँच पायेगा। गाडी के यात्री या उसका बेटा, किसी एक को मरना ही था। उसे तुरंत निर्णय लेना पड़ा। गाड़ी तेजी से अपना मार्ग से सुरक्षित पार कर गयी। गाड़ी के नीचे कुचले जाकर, निर्दयता से नदी में फेकें गये उस नन्हे शरीर के बारे में गाड़ी में किसी को भी पता न था। गाड़ी के पार कर जाने के बहुत देर बाद भी वह लीवर को अब भी कसकर पकड़ कर रोते उस आदमी के दयनीय मन के बारे में किसी को जानकारी न थी। अपने घर की तरफ धीरे-धीरे आगे बढ़ते आदमी को किसी ने न देखा था। अपने पुत्र को कैसे बलिदान किया, अपनी पत्नी को बताने जा रहे उस आदमी को किसी ने न देखा था।

अब उस आदमी के हृदय को विचलित कर रही उस भावना को आप अगर समझ पाते तो ..., हमारे और अनन्त जीवन के मध्य उस अथाह खाई को पार लगाने, स्वर्गीय पिता परमेश्वर ने अपने पुत्र का बलिदान किया। तब परम पिता पर गुजरी उन भावनाओं को हम समझने की शुरुआत करते हैं। जब उनका पुत्र मर गया, उन्होंने पृथ्वी को थरथराया। सारे आकाश पर अन्धकार छाने दिया। क्या इससे अचरज की कोई और बात हो सकती है? यीशु मसीह के द्वारा, हमारे लिए क्या किया गया है! - एक पल भी उस के बारे में सोचे बिना जिन्दगी में भागना; यह कैसे लगता है?

उनके प्रिय पुत्र को हमारे लिए बलिदान करने के लिए - आखिरी बार तुम ने कब परम पिता का धन्यवाद किया है?

- चुनीहुई।

सत्य की परख!

'तब मैंने छोटे बड़े सब मृतकों को सिंहासन के समक्ष खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गईं, तथा एक और पुस्तक खोली गई जो जीवन की पुस्तक है, और उन पुस्तकों में लिखी हुई बातों के आधार पर सब मृतकों का न्याय उनके कामों के अनुसार किया गया।' (प्रकाशितवाक्य २०:१२)'

विल्यम हन्टर

सन् १५५५, मार्च २६, के दिन केवल उन्नीस साल का, परमेश्वर का भय मानने वाले नवयुवक विल्यम हन्टर की हत्या की गयी। उनकी कहानी हर मसीही माँ-बाप के लिए एक सीख बने। जो अपने भावनाओं और धारणाओं के बीच में पिसते है। क्योंकि विल्यम के माँ-बाप ने उसको अपने विश्वास के अनुसार ही आगे बढ़ने दिया, भले ही उसका परिणाम मृत्यु हो।

विल्यम, लंदन में एक रेशम-बुनकर के पास प्रशिक्षण पाने नौकरी पर लग गया। रानी मेरी के राज्य काल का पहला वर्ष था। पैरिश के पादरी ने ईस्टर सभा के दौरान उसे प्रभु के भोज में भाग लेने का आदेश दिया। मगर विल्यम ने इनकार किया। उसका मालिक, इस भय से कि कही वह खुद विल्यम की वजह से मुश्किल में न पड़ जाये, विल्यम को बेन्टहवुड़ में अपने पिता के घर को लौट जाने के लिए कहा। विल्यम वापस लौट आया और कई हफ्ते वहाँ ही रहा।

कुछ पाँच या छः हफ्तों के बाद ब्रेन्टहवुड़ के गिरिजाघर में रखे एक बाइबल को विल्यम ने देखा। उसे उठा कर जोर-जोर से पढ़ने लगा। फादर अठवेल ने अन्दर आते ही उसे टोक दिया। 'क्या तुम बाइबल के साथ खिलवाड़ कर रहे हो?' अठवेल ने पूछा। 'क्या तुम जानते हो, तुम क्या पढ़ रहे हो? क्या तुम पवित्र शास्त्रों का खुलासा कर सकते हो?' 'इसका व्याख्यान करने मैं खुद अपने आप को लायक नही समझता हूँ।'

'मैं ने बाइबल को इधर पाया, अपने आप को सिर्फ सांत्वना देने के लिए इसे पढ़ रहा हूँ।' विल्यम ने उत्तर दिया।

'जब से बाइबल का अंग्रेज़ी भाषा में प्रकाशन हुआ है, तब से इस दुनिया में कुछ अच्छा नहीं हो रहा है।' फादर अटवल ने कहा।

'ऐसा मत कहिए! यह एक अच्छी पुस्तक है। हम परमेश्वर को कैसे खुश या ना खुश करते है हम इस से सीखते है।'

'क्या हम इस से पहले नही जानते थे?' अटवेल ने कहा।

'आज के जितना अच्छा नही। जबकि अब, हमारे पास बाइबल है', विल्यम ने उत्तर दिया। मेरी प्रार्थना है कि हमारे पास यह हमेशा रहे।'

फादर अठवेल आवेश से भड़क उठा, 'मैं तुम को अच्छे से समझता हूँ। तुम उनमे से हो जो महारानी की आज्ञाओं को नापसन्द करते हो। इसलिए तुम लंदन छोड आये हो। अगर तुम अपने चाल चलन को नही सुधरोगे तो, तुम और तुम जैसे अपधर्मी के कारण हंगामा मच जायेगा!'

'परमेश्वर अपने वचन पर विश्वास करने और चाहे कुछ भी हो जाये,उनके नाम को स्वीकार करने में मुझे ज़रूर अपना अनुग्रह देंगे', विल्यम ने उत्तर दिया।

'तुम अपधर्मी हो, मैं तुम से वाद-विवाद नहीं कर सकता। मगर एकहै जो कर सकता है, मैं उसे ढूढ़ कर लाता हूँ।' यह चिल्लाते अठवेल तेजी से गिरिजाघर से बाहर चला गया।

विल्यम बाइबल पढ़ते वही पर रूका रहा। तब तक अठवेल ने साऊथवेल क्षेत्र के धर्माध्यक्ष (विकर) को लेकर वापस लौटा। 'बाइबल पढ़कर उसका व्याख्यान करने की इज़ाजत तुम को किस ने दी', धर्माध्यक्ष ने प्रश्न किया। 'मैं इसका खुलासा नही कर रहा हूँ महाशय', विल्यम ने उत्तर दिया। 'मैं केवल कुछ दिलासा पाने केलिए इसे पढ़ रहा हूँ।'

'असल में, तुम को इसे पढ़ने की जरूरत ही क्या है?'

' जब तक मैं जिन्दा हूँ, मैं इसे पढ़ता ही रहूँगा। आप लोगों को ऐसा करने से निरूत्साहित नही करना चाहिए । बल्कि प्रोत्साहित करना चाहिए था।'

' ओह, क्या करना चाहिए, तुम मुझे सिखाना चाहते हो?' धर्माध्यक्ष बड़बडाया, 'तुम एक अपधर्मी हो!'

' सिर्फ इसलिए कि मैं सच बोल रहा हूँ, क्या मैं एक अपधर्मी हूँ?'

परम संस्कार इत्यादि को लेकर उनके बीच वाद-विवाद आगे बढ़ा। इन सब के बारे में विल्यम अपनी राय स्पष्ट कर रहा था। उस पर अपधर्मी होने का इलजाम लगाये जाने पर, विल्यम ने उत्तर दिया, काश ऐसा हो कि हम दोनों को अग्नि-खूँटे से बांध दिया जाये, यह साबित करने कि कौन अपने विश्वास के लिए ज्यादा देर खड़ा रह पायेगा। मुझे यकीन है कि तुम पहले पीछे हटोगे।'

'इस के बारे में हम जरूर देखेंगे', विकर यह कहते उस लड़के के बारे में किसी से चर्चा करने वहाँ से निकल गया।

वह धर्माध्यक्ष सीधा मास्टर ब्राउन के पास गया। मास्टर ब्राउन ने विल्यम के पिताजी, हन्टर को तुरन्त अपने पास बुलवाया। स्थानीय पुलिसवाले को भी बुलाया। हन्टर जी से यह कहा गया कि वे जाकर अपने बेटे को तलाशे। महाध्यक्ष के साथ वाद विवाद के पश्चात विल्यम अकलमन्दी से, शहर छोड़ कर चला गया। ब्राउन को खुश करने के लिए हन्टर ने दो-तीन दिन घोड़े पर सवार विल्यम को ढूँढ़ता रहा। उनकी यह आशा थी कि वह वापस जाकर यह कहे कि उस लड़केका पता नही चला। मगर अचानक दोनों मिले। हन्टर ने बेटे को वहाँ से भागकर छिप जाने के लिए कहा, ताकि वह वापस जाकर कहे कि उसे ढूँढ़ नही पाया।

'नही, पिताजी।' विल्यम ने कहा, 'मैं आप के साथ घर वापस चलूँगा, ताकि आप मुश्किल में न पड़ो।' शहर में आते ही विल्यम को गिरफ्तार किया गया। उसे ब्राउन के सामने लाया गया। 'तत्वान्तरण' के विषय में बहस हुआ। विल्यम अपने विश्वास में इतना डटा रहा कि ब्राउन गुस्से से और अधिक आगबबूला हो गया। ब्राउन ने विल्यम को लंदन के बिशप बोनर के पास बेज दिया।

विल्यम को लंदन में दो दिनों के लिए कटघरे में बन्द किया। उसे सिर्फ एक टुकड़ी रोटी और एक प्याला पानी दिया जाता था। बाद में बिशप के सामने पेश किया गया। कुछ नतीजा न निकलते हुए देखकर बोनर ने उसे जेल में बन्द करने और जंजीरों से बाँधने की आज्ञा दी।

कितने साल की हो? उसने विल्यम से पूछा।

'उन्नीस।'

'आज को छोड, उस से बेहतर नही कर पाये तो, बीस का होने से पहले ही जला दिये जाओगे!' बोनर ने कहा।

विल्यम नौ महीनों तक जेल में रहा। उस दौरान उसे छःदफा बिशप के सामने पेश होना पड़ा। ९ फरवरी को जब वह छठी बार पेश हुआ, उसे सजा सुनाई गई। उस दिन बिशप ने विल्यम के सामने एक आखिरी प्रस्ताव रखा। 'अगर तुम अपना मत त्याग करो, तो मैं तुम को आजाद करूँगा, अपना व्यापार स्थापित करने चालीस पाऊड की रकम भी दूँगा। या फिर मैं तुमको अपने घर का मुख्य प्रबन्धक बनाऊँगा, क्यों कि तुम मुझे पसन्द हो। तुम चतुर हो। अगर तुम अपने विश्वास से मुकर जाओ तो मैं तुम्हारी हिफाजत करूँगा।'

विल्यम ने उत्तर दिया, 'धन्यवाद, मगर संसार के प्रेम के लिए मैं परमेश्वर से मुकर नही सकता, पवित्र वचन से परे, तुम मेरे मन को नही बदल सकते। मसीह के प्रेम की तुलना में मैं इस संसारिक चीजों को तुच्छ और गोबर समझता हूँ।'

'अगर तुम इस विश्वास में मर जाओगे तो तुम हमेशा के लिए अपराधी ठहरोगे', बिशप ने कहा। मगर विल्यम स्थिर रहा, 'परमेश्वर धार्मिकता से न्याय करता है। जिसको मनुष्य अन्याय सहित दोषी ठहराते है, उनको वह निर्दोष साबित करता है।'

विल्यम को वहाँ से एक महीने के लिए न्यूगेट जेल में भेजा गया। तब उसे अग्नि-मृत्यु दण्ड देने, ब्रेन्टवुड में अपने घर लाया गया। विल्यम को देखने उसके माँ-बाप आये। मसीह के लिए मरने भी तैयार पुत्र पाकर उनको बहुत गर्व हुआ, यह कह कर उन दोनों ने विल्यम को अपने विश्वास में दृढ़ रहने के लिए प्रोत्साहित किया।

अग्निदण्ड के लिए खंभे से बंधा विल्यम, लोगों से अपने लिए प्रार्थना करने के लिए कहा। मिस्टर ब्राउन ने द्वेष से कहा, 'तुम्हारे लिए प्रार्थना करूँ? एक कुत्ते की भांति मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करना न चाहूँगा।'

'मैं तुम को माफ करता हूँ।'

'मैं तुम से माफी नही माँग रहा हूँ।' ब्राउन चिल्लाया। एक पादरी बाइबल को लेकर अपनी ओर आते देखकर, विल्यम ने उंची आवाज़ से कहा, 'दूर हटो! तुम झूठे नबी हो! सब इन से सावधान रहो। उनके शाप के भागीदार मत बनो।' 'तुम इधर जिस तरह जल रहे हो, उसी तरह नरक में भी जलते रहोगे', पादरी ने कहा। 'तुम झूठे हो, झूठे प्रवक्ता हो, इधर से दूर हटो' विल्यम चिल्लाया।

भीड़ में एक आदमी ने कहा, 'मैं तुम्हारे आत्मा की शान्ति के लिए परमेश्वर से विनती करता हूँ।' तब सब ने आमीन, आमीन कहा। जब आग जला रहे थे, 'विल्यम, मसीह के क्रूस पर उस पवित्र यातना को याद करो, मृत्यु से मत डरो', विल्यम के भाई ने पुकारा।

'मुझे डर नहीं है।' विल्यम ने अपने हाथों को स्वर्ग की ओर उठाकर कहा, 'प्रभु मेरी आत्मा को ग्रहण करो।' धुएँ में अपने सिर को झुका कर, सत्य के लिए विल्यम ने अपनी जान दे दी। परमेश्वर की स्तुति के लिए, लहू से मुहर लगाकर अपना प्राण दे दिया।

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दीजिए।